36 BNS.

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

December 2018
Issue-29, Vol-01

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

Vidyawarta™
International Multilingual Research Journal

Editorial Board & Advisory Committee

1) Dr. Vikas Sudam Padalkar (Japan)
2) M.Saleem, Sialkot (Pakistan)
3) Dr. Momin Mujtaba (Saudi Arebia)
4) N.Nagendrakumar (Sri Lanka)
5) Dr. Wankhede Umakant (Maharashtra)
6) Dr. Basantani Vinita (Pune)
7) Dr. Upadhya Bharat (Sangali)
8) Jubraj Khamari (Orissa)
9) Krupa Sophia Livingston (Tamilnadu)
10) Dr. Wagh Anand (Aurangabad)
11) Dr. Ambhore Shankar (Jalna)
12) Dr. Ashish Kumar (Delhi)
13) Prof.Surwade Yogesh (Satara)
14) Dr. Patil Deepak (Dhule)
15) Dr. Singh Rajeshkumar (Lucknow)
16) Dr. Ashlesha Mungi (Baramati)
17) Dr.Patwari Vidya (Jalna)
18) Dr. Maske Dayaram (Hingoli)
19) Dr.Padwal Promod (Waranasi)
20) Dr.Lokhande Nilendra (Mumbai)
21) Dr.Narendra Pathak (Lucknow)
22) Dr.Bhairulal Yadav (West Bangal)
23) Dr.M.M.Joshi (Nainital)
24) Dr.Sushma Yadav (Delhi)
25) Dr.Seema Sharma (Indor)
26) Dr. Choudhari N.D. (Kada)
27) Dr. Yallawad Rajkumar (Parli v.)
28) Dr. Yerande V. L.(Nilanga)
29) Dr. Awasthi Sudarshan (Parli v.)
30) Dr. Prema Chopde (Nagpur)
31) Dr Watankar Jayshree
32) Dr. Saini Abhilasha,
33) Dr. Vidya Gulbhile (M.S.)
34) Dr. Kewat Ravindra (Chandrapur)
35) Dr. Pandey Piyush (Delhi)
36) Dr. Suresh Babu (Hydarabad)
37) Dr. Patel Brijesh (Gujrat)
38) Dr. Trivedi Sunil (Gujrat)
39) Dr. Sarda Priti (Hydarabad)
40) Dr. Nema Deepak (M.P.)
41) Dr. Shukla Neeraj (U.P.)
42) Dr. Namdev Madumati (M.P.)
43) Dr. Kachare S.V. (Parli-v)
44) Dr. Singh Komal (Lucknow)
45) Dr. Pawar Vijay (Mumbai)
46) Dr. Chaudhari Ramakant (Jalgaon)

Indexed

IMPACT FACTOR 5.131 iijif

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

Note : The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. 'Printing Area' dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute,academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Disputes, If any shall be decided by the court at **Beed** (Maharashtra, India)

http://www.printingarea.blogspot.com

26	डॉ. भास्कर उमराव भवर	समकालीन हिंदी गजल: विविध विमर्श	72
27	डॉ. भाऊसाहेब नवनाथ नवले	सामाजिक प्रतिबद्धता की पुरजोर हिमायत : समकालीन हिंदी ग़ज़ल	74
28	डॉ. कैप्टन बाबासाहेब गाने,	डॉ. सुमन जैन की ग़ज़लों में व्यक्त नारी संवेदना"	77
29	डॉ. बबन चौरे	दुष्यंतकुमार की गजलों में राजनीतिक विमर्श	80
30	डॉ. दीपक रामा तुपे	माँ की तलाश करती मुनव्वर राना की ग़ज़ल	82
31	डॉ. गायकवाड हनुमंत येदू	निदा फजली और दुष्यंतकुमार की हिंदी गजलों में सामाजिक विमर्श	84
32	डॉ. जगदीश बन्सीलाल चव्हाण	हिंदी गजलकारों की गजलों में सामाजिक अभिव्यक्ति	86
33	डॉ.जयराम श्री. सूर्यवंशी	समकालीन हिंदी गजल : महानगरीय एवं देहाती चेतना	88
34	डॉ. मिलिंद सालवे	समकालीन गजलों में राष्ट्रीय एकता के रंग	90
35	डॉ. संतोष मोटवानी	हिन्दी गजल का विकास	94
36	निवृत्ती शेषेराव भेंडेकर	21 वीं सदी की हिन्दी ग़ज़ल में राजनीतिक चेतना	97
37	प्रा.डॉ. पी. आर.गवळी	ओमप्रकाश यती की ग़ज़लों में संवेदना के विविध आयाम	99
38	डॉ.पंडित बन्न	दुष्यंतकुमार के गजलों में सामाजिक संवेदना	103
39	प्रा. डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा	ज्ञानप्रकाश विवेक की ग़ज़लों में वेदना और निराशा के स्वर	105
40	प्रा. डॉ. प्रमोद गोकुळ पाटील प्रा. मच्छिंद्र गुलाब ठाकरे	'जहीर कुरेशी की गजलो में राजनीतिक एवं सामाजिक विमर्श'	107
41	डॉ पूनम त्रिवेदी	देवेन्द्री मन्द्रवाल अफ़शाँ की ग़ज़लों में यथार्थवादी चिंतन	109
42	डॉ. आर. के. जाधव	इक्कीसवीं सदी की हिंदी–ग़ज़लों में विविध विमर्श	111
43	प्रा डॉ राजेंद्र रोटे	दुष्यन्तकुमार के ग़ज़लों में राजनीतिक विमर्श"	113
44	डॉ. रेखी अमरजा अजित	हिंदी गजल मे अन्यान्य विमर्श : नैतिक जीवन – मूल्य	115
45	डॉ. सुनील बापू बनसोडे	चंद्रसेन विराट की ग़ज़लों में चित्रित आम आदमी ('बोल, मेरी जिन्दगी!' के संदर्भ में)	117
46	प्रा. डॉ. संजय चोपडे	"सुरेश भट के गजलों में सामाजिक पक्ष"	119
47	डॉ. शेख मोहम्मद शाकिर	हिंदी गज़ल में स्त्री विमर्श : सुवर्णा परतानी की ग़ज़लों के संदर्भ में	122
48	प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड	दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लों में सामाजिकता	124
49	आमलापुरे सूर्यकांत विष्वनाथ	21 वी सदी की हिंदी गजलों मे सामाजिक विमश	127
50	डॉ.वैशाली शिंदे,	21 वीं सदी के हिंदी ग़ज़लों में सामाजिक विमर्श	130
51	डॉ. विजय एकनाथ सोनज	रामकुमार कृषक की ग़ज़लों में सामाजिक बोध	132
52	प्रा. शेख जाकीर एस	समकालीन हिन्दी गजलों में व्यक्त राजनीतिक बोध	135

21 वीं सदी की हिन्दी ग़ज़ल में राजनीतिक चेतना

प्रा. निवृत्ती शेषेराव भेंडेकर

हिन्दी साहित्य में ग़ज़ल एक आगत विधा है। अरबी, फारसी, उर्दू से होकर यह हिन्दी साहित्य में अवतरीत हुई है। साहित्य में एकाएक किसी विधा का निर्माण नही होता, उसमें शुरूआती प्रसाय होते है और फिर वह विधा भाषाभंगीमाओं के साथ वस्तु एवं शिल्प में शुद्ध रूप धारण कर विकसीत होती है। हिन्दी में ग़ज़ल के साथ भी ऐसा ही हुआ। अमीर खुसरो से लेकर साहित्य के मध्यकाल तक ग़ज़ल धीमी गती से लिखी जाती रही है। ग़ज़ल का विशुद्ध रूप में विकास हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में हुआ। यहीं से ग़ज़ल विषयवस्तु एवं शिल्प की दृष्टि से व्यापक एवं प्रभावी बनी है।

आधुनिक काल की ग़ज़ल को लेकर डॉ. रामदेव लाल 'विभोर' ने महत्वपूर्ण विचार रखे है। उनके मतानुसार "हिन्दी ग़ज़ल का आधुनिक काल निश्चित रूप से एक सशक्त कालावधि कही जा सकती है। स्वतंत्र भारत की दशा और दिशा पर जाने कितनी ग़ज़लें कहीं गईं और अब भी कहीं जा रहीं है। गुलामी प्रथा और जमींदारों के जुल्म, मेहनतकश की दयनीयता, कृषकों की बदहाली, बेराजगारी, माफियाओं का आतंक, बेइमानी, भ्रष्टाचार, उत्पीडन, गरीबी के आलम, जात पात के भेदभाव, वर्ग संघर्ष, चोरी बटमारी, मँहगाई, रिश्ते नातों मे खटास आदि नाना प्रकार के मसलें और उनके दुष्प्रभाव देश को दिन प्रतिदिन खोखला बनाते जा रहें हैं। देश में सुख शांति विलुप्त होती जा रही है। पूँतिपतियों का बोलबाला है और जनसामान्य पिसते जा रहें है। लडाई, झगडें, हडताल, तालाबन्दी, आगजनी, विस्फोट, नशाखोरी, धोखाधडी, दुराचार आदि बढ़ते जा रहें हैं। धार्मिक उन्माद व मारामारी की घटनाएँ आए दिन स्थितियाँ बिगाडती चली जा रहीं है। घोटाले पर घोटाले घटित होते जा रहें है। सामान्यजन के दीन और ईमान संकट में है। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के नंगे नाच देखने को मिलते है। शासन प्रणाली के प्रति आकोश, खीज व संघर्षशीलता किसी न किसी रूप में पनपती जा रही है। धर्मोपदेश उपेक्षित होते जा रहें है। देश को तमाम राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय समस्याओं से गुजरना पड रहा है। देशी मुद्रा का अवमूल्यन बढता जा रहा है। कालाबाजारी और मुनाफाखोरी चरम पर है। देश पर काले धन का संकट मँडरा रहा है। आचरणहीनता हद पाद कर गई है। अबलाओं पर संकट छाया है। हर्ष की बात है कि हिन्दी में कही जा रही ग़ज़लों ने उपर्युक्त सभी मुददों को अपने कंधों पर उठा लिया है, उन को अपना विषय बना लिया है। ग़ज़लें इन विडम्बनाओं को स–हदयों तक पहुँचाने का जिम्मा उठा चुकी है।" 01

राजनीति के क्षेत्र में कुछ अपवाद अगर छोड दिये जाये तो ऐसा दिखाई देता है कि राजनीति केवल स्वार्थ सिद्धी का साधनमात्र बन गई है। विकास के नाम पर जनता का शोषण बडी सफाई से किया जाता है। विकास के केवल दिखावे किये जा रहें है। पक्ष हो या विपक्ष, सत्ता किसी की भी हो, स्वार्थांधता सर्वत्र व्याप्त है। ओम नीरव की यह पंक्तियाँ इस विडम्बना को सराहनीय रूप से चित्रित करती है –

"कुर्सियाँ दुलहनें कुछ करें भी तो क्या,/जब लुटेरों के कंधे चढ़ीं डोलियाँ।" 02

सामान्य जनता की अपेक्षा होती है कि यह नेतागण हमारा कल्याण करेंगे, हमारी सारी समस्याओं का निराकरण करेंगे, समाज में सौहार्द्र एवं समन्वय स्थापित करेंगे, विकास करेंगे आदि। नेतागण भी चुनावों के समय आश्वासनों पर आश्वासनों की बौछार करते है परंतु चुनाव के बाद विकास और कल्याण के आश्वासनों की भूल कर अपनी सियासत और उसके दाँव पेचों में व्यस्त हो जाते है। आवारा नवीन के शब्दों में –

"राजनीतिज्ञ रंग बदलें गिरगिटों सा/कुर्सियों से लोग अब लसने लगे है।" 03

राजनीतिज्ञों की इस रंग बदलने की प्रवृत्ति के कारण जनता का मोहभंग ही होता है। विकास की नारेबाजीयाँ चलती ही रहती है। और विकास की योजनाएँ प्रारंभ भी हो तो उसमें भी सत्ता के ठेकेदारों की अपनी अपनी स्वार्थ लिप्सा उसे जनता तक सीधे पहुँचने नहीं देती। उपर से नेता विकास की योजनाओं को लाने के श्रेय का विज्ञापन कर जनता को यह जताना चाहता है कि वह जनता के लिए, जनता के हित का काम कर रहा है। ऐसी नेतागणों की दोहरी प्रवृत्तियों पर भी करारें व्यंग्य वर्तमान हिन्दी ग़ज़ल में सराहनीय रूप में दिखाई देते हैं –

"नीतियाँ दोहरी हैं नहीं अच्छीं,/जीने का इक नियम बनाओ तुम।" 04

राजनीति के क्षेत्र में व्याप्त इस स्वार्थांधता और अराजकता को देखकर सामान्य जनता भी विकास को लेकर क्या अधिक अपेक्षा कर सकती है ? उसके लिए तो कल्याण और सामाजिक विकास को लेकर केवल चिन्ता ही रह जाती है –

"जा रहा मुल्क है अब डगर कौनसी,/ये सियासत की धारा समझ लीजिए।" 05

एक समय था जब राजनीति को बडे आदर और सम्मान के साथ देखा जाता था। देश की राजनीति जीतनी मजबूत होती है देश उतना समर्थ और शक्तिशाली होता है। आज वर्तमान में राजनीति के क्षेत्र पर नजर डाले तो अच्छाईयों से अधिक बुराईयों का बोलबाला दिखाई देता है। झूठें नारें, झूठें आश्वासन, झूठा दिखावा , आरोप – प्रत्यारोप, भ्रष्ट नेतागण यही अधिकतर व्याप्त होने के कारण स्वाभाविक रूप से आम आदमी इससे निराशा एवं हताशा से गरत है। उसे यह सब एक झूठ जैसा ही प्रतीत होता हुआ नजर आ रहा है –

"इस सियासत ने जहाँ भी पग धरें हैं/झूठ का परचम वहीं फहरा रहा है।" 06

वर्तमान राजनीति के क्षेत्र को देखा जाये तो कुछ अपवाद छोडकर राजनीति केवल स्वार्थ सिदिध का साधन बनी हुई दिखाई देती है। सामान्य जनता का विकास और देश हित की भावना दोयम और स्वार्थ सबसे परे ऐसी स्थिति नजर आती है। वर्तमान गजकार इस बात को भी अपनी ग़ज़लों में वाणी प्रदान करते हुए नजर आते है –

''राज 'नीति' कभी रही होगी,/आजकल यह दुकानदारी है।'' 07

वर्तमान समय में स्वार्थ इतना हावी हो गया है कि सामान्य से सामान्य कार्यकर्ता भी यह सोचता है कि मुझे क्या मिलेगा ? मेरा क्या फायदा है ? अथवा मुझे कौनसा पद मिलेगा ? आदि आदि। ऐसे वातावरण में राजनीति के माध्यम से विकास और समृद्धता की बात ही क्या की जा सकती है। फायदा नजर नहीं आया तो रातों रात नेतागण पक्ष और अपनी विचारधारा को बदलने में भी अनाकानी नहीं करते हुए नजर आ रहें है –

''निश्ठा का अब है ये हाल सियासत में/रोज बदलते झण्डे मेरे साथी है।'' 08

अतः संक्षेप में कहा जाये तो आज वर्तमान राजनीति के क्षेत्र में कुछ अपवादो को छोड दिया जाये तो अधिकतर यह क्षेत्र सामान्य जनता के विकास की अपेक्षा आत्मविकास को प्राधान्य देनेवाले लोगों से घिरा हुआ है। जनता के सेवक कहलाने वाले जनता के भक्षक बनते हुए नजर आ रहे है। हिन्दी ग़ज़लकारों ने राजनीति के इस विदारक सत्य को सराहनीय और यथार्थता के साथ अपनी ग़ज़लों में वाणी प्रदान की है जिसका उद्देश्य केवल इतना है कि यह चित्र बदलना चाहिए। वर्तमान समय के ग़ज़लकारों की यह परिवेशगत सजगता और परिवर्तन की कामना निश्चित सराहनीय है।

संदर्भ :–

1) ग़ज़ल का हिन्दी प्रांगण – डॉ. रामदेव लाल विभोर, ग़ज़ल गरिमा, संपा. भानुमित्र, जुलाई 2018, पृष्ठ 41
2) ओम नीरव – वहीं, पृष्ठ 06
3) आवारा नवीन – वही, पृष्ठ 17
4) हरिप्रकाश श्रीवास्तव – वहीं, पृष्ठ 10
5) कृपाशंकर श्रीवास्तव – वही, पृष्ठ 20
6) अमन चाँदपुरी – वहीं , पृष्ठ 25
7) हरेराम समीप – जनपथ, फरवरी – मार्च 2012, पृष्ठ 53
8) ओमप्रकाश यती – जनपथ, फरवरी – मार्च 2012, पृष्ठ 61.

हिन्दी विभाग,
कला,वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
गंगाखेड. जि. परभणी.
भ्रमणध्वनि– 9421041001